ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 239-240**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

पत्रकार प्रेमचंद

डॉ0 सन्दीप सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, पं0 जे0 एल0 एन0 कॉलेज, बाँदा (उ0प्र0) भारत

Received-06.08.2022, Revised-10.08.2022, Accepted-15.08.2022 E-mail: dr.sandeepsingh1981@gmail.com

सारांशः – प्रेमचंद के कथा साहित्य की तुलना में उनकी पत्रकारिता की चर्चा नहीं के बराबर हुई है। उनके पत्रकारीय लेख, रिपोर्ताज, सम– सामयिक सामाजिक व राजनीतिक सन्दर्भों में की गयी वैचारिक टिप्पणियाँ, पुस्तक परिचय व समीक्षाएँ इत्यादि को पढ़े बिना प्रेमचंद के समग्र साहित्यिक अवदान को समझा ही नहीं जा सकता। प्रेमचंद ने सन् 1903 में स्वतंत्र पत्रकारिता प्रारंभ की थी और यह सिलसिला वर्ष 1930 में आरम्भ 'हंस' के प्रकाशन तक चलता रहा। इस तरह के लेखन की शुरुआत उन्होंने ओलिवर क्रॉमवेल के विभिन्न प्रसंगों पर टिप्पणी लेखन से की थी, जो 'आवाजे खल्क' में 1 मई 1903 से 24 सितंबर 1903 तक धारावाहिक छपी थी। इस पत्र के अलावा 'स्वदेश'और 'मर्यादा'में भी मुंशी प्रेमचंद रिपोर्ताज व टिप्पणियाँ लिखते रहे थे। उर्दू के प्रसिद्ध पत्र 'जमाना' से तो उनका आत्मीय संबंध था ही, जो जीवनपर्यंत बना रहा। 'जमाना' में प्रेमचंद रपटों व टिप्पणियों के अलावा 'रतारे जमाना' के नाम से एक स्थायी स्तंभ भी लिखते थे।

कुंजीभूत शब्द– समुचित अवसर, महिला सशक्तिकरण, परिवर्तन, जनसंचार के साधन, समानता, आत्मनिर्भरता, शिक्षा।

प्रेमचंद की पत्रकारिता से हम यह सीख ले सकते हैं कि रपट या टिप्पणी चाहे कलेवर में जितनी छोटी हो, उसकी संप्रेषणीयता इतनी प्रभावशाली होनी चाहिए और वक्तव्य इतना स्पष्ट होना चाहिए कि कोई उसकी उपेक्षा नहीं कर सके । उदाहरणार्थ 'हंस'के फरवरी 1934 के अंक में प्रकाशित 'जाति भेद मिटाने की एक आयोजना' शीर्षक, प्रेमचंद की एक छोटी सी रपट को देखा जा सकता है। इस रिपोर्ट की पहली ही पंक्ति में यह सूचना दी गई है कि बंबई के मिस्टर बी0 यादव ने वर्तमान भेद–भाव को मिटाने के लिए यह प्रस्ताव किया है कि, सभी हिन्दू उपजातियों को ब्राह्मण कहा जाए और हिन्दू शब्द को उड़ा दिया जाए, जिससे भेद–भाव का बोध होता है। उसके ठीक बाद प्रेमचंद टिप्पणी करते हैं– "प्रस्ताव बड़े मजे का है। हम उस दिन को भारत के इतिहास में मुबारक समझेंगे, जब सभी हरिजन ब्राह्मण कहलाएँगे। "वस्तुतः प्रेमचंद की पीड़ा यह है कि हम पहले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या हरिजन हैं, पीछे आदमी।

जातिगत भेद–भाव हमारे रक्त में सन गया है और लोग सांप्रदायिकता का बिगुल बजाकर फूले नहीं समाते, वर्ना अपने को सवर्ण कहने की क्या आवश्यकता है? 'हंस' के ही जनवरी 1934 'अच्छी और बुरी सांप्रदायिकता' इसमें वे लिखते हैं कि, इंडियन सोशल रिफार्मर नामक पत्र ने कहा है कि सांप्रदायिकता। अच्छी भी है और बुरी भी। बुरी सांप्रदायिकता को उखाड़ना चाहिए, मगर अच्छी सांप्रदायिकता वह है, जो अपने क्षेत्र में बड़ा उपयोगी काम कर सकती है। उसकी क्यों अवहेलना की जाए। इतनी जानकारी देने के बाद प्रेमचंद टिप्पणी करते हैं–"अगर सांप्रदायिकता अच्छी हो सकती है। तो पराधीनता भी अच्छी हो सकती है। झूठ भी अच्छा हो सकता है।" दरअसल जात–पात और सांप्रदायिकता की जिस समस्या को प्रेमचंद ने आज से लगभग पचहत्तर साल पहले अपनी छोटी–छोटी टिप्पणियों के द्वारा उठाया था, वह आज भी समाज में विद्यमान है, बल्कि उसके खतरे आज घटने की बजाय बढ़े हैं। प्रेमचंद की पत्रकारिता मुद्दों पर केंद्रित थी । उन्होंने हर विषय पर कलम चलाई। स्वाधीनता संग्राम, अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति, हिन्दू–मुसलमान, छूत–अछूत, किसान–मजदूर, नागरिक शासन, साहित्य, दर्शन, धर्म, समाज, शिक्षा, संस्ति, और स्त्रियों की दशा से लेकर राष्ट्रभाषा से जुड़ी अनेक समस्याओं पर प्रेमचंद ने रिपोर्ताज, टिप्पणियाँ व लेख लिखे। प्रेमचंद ने केवल पत्रकारीय लेखन ही नहीं, बल्कि संपादन भी किया। उन्होंने सन् 1933–34 में 'जागरण' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया तो वर्ष 1930 से 1936 तक मासिक 'हंस' का । प्रेमचंद जिस धर्म बुदि्ध से 'जागरण'व 'हंस'का संपादन कर रहे थे, वह जनता के हित से बँधी थी । प्रेमचंद के संपादकीय संस्पर्श ने 'जागरण'व 'हंस'को आदर्श पत्र ही नहीं बनाया बल्कि उनके सम्पादकत्व में इन दोनों पत्रों को अपार लोकप्रियता भी प्राप्त हुई ।

संपादक के रूप में प्रेमचंद अनेक प्रतिकूलताओं का सामना करते हुए भी अपने धवल चरित्र व ऊँचे मनोबल से अंग्रेजी साम्राज्यवाद का जमकर प्रतिरोध करते थे । प्रेमचंद एक ओर अपने पाठकों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध महात्मा गांधी के आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं, तो दूसरी तरफ अंग्रेजी शासन के कुत्यों व नृशंसता का तीव्र प्रतिरोध भी करते हैं। इसीलिए 'जागरण' व 'हंस' को कई बार ब्रिटिश शासन का कोपभाजन बनना पड़ा। 'जागरण' के 12 दिसंबर 1932 के अंक में प्रेमचंद ने स्वयं इस कोप का विवरण दिया है। उन्होंने इस सन्दर्भ में लिखा है कि "हंस की जमानत से हाल ही में गला टूटा है। पाँच महीनों तक पत्र बंद रहा, इसलिए इतनी जल्दी जमानत का हुक्म पाकर हम क्षुब्ध हुए। "इसी टिप्पणी में प्रेमचंद आगे लिखते हैं, "ऐसे वातावरण में जबकि हर संपादक के सिर पर तलवार लटक रही हो, राष्ट्र का सच्चा राजनीतिक विकास नहीं हो सकता। "प्रेमचंद ने कभी उस

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

तलवार की परवाह नहीं की।

मार्च 1930 में महात्मा गांधी के दांडी मार्च के अवसर पर प्रेमचंद ने मासिक पत्रिका हंस का प्रकाशन शुरू किया था । इस समय तक वे अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर पूरी तरह पत्रिका के प्रकाशन में जुट चुके थे । 'हंस' के प्रवेशांक में बड़ी खुशी के साथ वह इस बात का उल्लेख करते हैं कि, "इस पत्रिका का निकलना उस शुभ अवसर के साथ हुआ, जब देश ने स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने का फैसला लिया है।" लगभग साढ़े छः वर्षों तक (मृत्युपर्यंत) प्रेमचंद ने 'हंस' का संपादन किया। सन् 1933 के एक लेख में वे लिखते हैं कि " देश राष्ट्र बनना चाहता था। उसे पंथवाद में ढकेल दिया गया, जहाँ केवल हिंदू–मुसलमान थे, वहाँ मुसलमान, अछूत, सिक्ख, ईसाई, अधगोरे, गोरे, इतने जंतु निकाल खड़े किए गए और इन सबों ने अपने तेज दाँतों और पैने नखों से शिशु राष्ट्र को धर दबोचा।"

प्रेमचंद देशहित के किसी भी प्रश्न पर अपनी स्पष्ट राय रखते थे। ब्रिटिश सुधारों के प्रयास के खोखलेपन की सच्चाई को वे निरन्तर उजागर करते रहे । सन् 1935 में ही अंग्रेजों द्वारा अधिनियम के माध्यम से लोकतंत्र का डंका पीटने के छद्म का वे भंडाफोड़ करते हैं। उनकी .ष्टि में यह लोकतंत्र बिल्कुल नहीं था।वे लिखते हैं , " विधायिका में कुछ सदस्य और बढ़ गए थे, किंतु आम जनता वैसे ही असहाय थी, जैसे पहले थी। इसके अलावा विधायिका लाचार थी तथा यह मूल्यहीन हो चुकी थी।" प्रेमचंद नौकरशाही द्वारा किसी भी समस्या की जाँच के नाम पर किए जा रहे हीला हवाली और भ्रम फैलाने को अनुचित करार देते हुए कमेटी बनाने की उस गलत परंपरा पर कुठाराघात करते हैं , जो आज भी भारत की नौकरशाही में प्रचलित है । ' हंस ' के एक लेख में सन् 1931 में प्रेमचंद लिखते हैं कि " कमेटी और तहकीकातों से असली बात को टालते रहना राजनीति की पुरानी चाल है। जहाँ किसी बात की शिकायत पैदा हुई और उस शिकायत ने जोर पकड़ा कि फौरन तहकीकात की कमेटी बना दी गई।प्रेमचंद की आर्थिक स्थिति बहुत सुढ़ नहीं थी। बड़ी कठिनाई से वह पत्रिका के प्रकाशन का काम कर रहे थे। फिर भी बाजार के दबावों के आगे वे नतमस्तक नहीं हुए और न ही उन्होंने अपना तेवर छोड़ा। ' हंस ' पर प्रतिबंध लग जाने के बाद जैनेन्द्र को लिखे एक पत्र में वे 15 अगस्त 1932 को जागरण पत्र को लेने की बात करते हैं । इस पत्र में जहाँ एक ओर उनकी आर्थिक परिस्थिति का पता चलता है , वहीं दूसरी तरफ उनके बुलंद हौसले से भी हम वाकिफ होते हैं । वे लिखते हैं – 'हंस' में कई हजार का घाटा उठा चुका हूँ । लेकिन साप्ताहिक के प्रलोभन को न रोक सका। कोशिश कर रहा हूँ कि सर्वसाधारण के अनुकूल पत्र हो। इसमें भी हजारों का घाटा ही होगा, पर करूँ क्या, यहाँ तो जीवन ही एक लम्बा घाटा है।" अपने समय के सर्वाधिक सचेत लेखक–पत्रकार के रूप में प्रेमचंद किसी भी अमर्यादित या स्तरहीन सामाजिक व्यवहार तथा अखबारी टिप्पणी की भी पूरी खबर लेते थे। बात चाहे विषयवस्तु की हो या भाषा की । 'जमाना' में दिसंबर 1909 को लिखे एक लेख में वे लिखते हैं 'गालियों' पर । इस लेख में उत्तर भारतीय समाज में व्यवहृत गालियों पर वे समाज को आड़े हाथों लेते हैं। इसी लेख में उन्होंने लखनऊ के एक तथकथित जिंदादिल अखबार की भी खूब खबर ली है, जिसने होली में मोटे–मोटे अक्षरों में छापा था– 'आई होली, आई होली, हमने अपनी धोती खोली'। बड़े तल्ख लहजे में प्रेमचंद लिखते हैं–"यह इस जिंदादिल अखबार की जिंदादिली है। वह सभ्य और सुसंस्.त रुचि का समर्थक समझा जाता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आज से लगभग 90–100 साल पहले प्रेमचंद ने, पत्रकारिता क्या होती है, इसकी एक मजबूत नींव रखते हुए इसका एक परि.श्य हमारे सामने उपस्थित कर दिया था। उनकी पत्रकारिता एक ऐसी आवाज थी, जो कहीं भी अन्याय, दमन और शोषण के मुकाबले जनता की आवाज बनकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने वाले स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित रही। अपने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने वाले प्रेमचंद सरीखे बड़े पत्रकारों से सीख लेकर जनता की आवाज के रूप में पत्रकारिता के महत्व को फिर प्रतिष्ठित किया जाए, एक ऐसी निर्भय और स्वतंत्र आवाज के रूप में–जो धर्म, राजनीति, बाजार और दूसरे किसी भी प्रकार के दबावों से मुक्त हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय अमृत–विविध प्रसंग (खण्ड–एक)।
2. राय अमृत– विविध प्रसंग (खण्ड–दो)।
3. राय अमृत–कलम का सिपाही।
4. गोपाल मदन – कलम का मजदूर।
5. 'हंस' का प्रवेशांक।
6. रहबर हंसराज – प्रेमचन्द : जीवन, कला और कृतित्व।
7. गोयनका कमल किशोर – प्रेमचंद : अनछुए प्रसंग।

*****